जनसंख्या नियंत्रण पर बढ़ती सहमति

अनूप भटनागर

ऐसा लगता है कि विपक्ष धीरे-धीरे केन्द्र सरकार पर 'दो संतान' की नीति अपनाने के लिये दबाव डालने की रणनीति पर काम कर रहा है। इसका संकेत शिव सेना के सासंद द्वारा राज्यसभा में दो संतान की नीति बनाने के लिये निजी विधेयक पेश किये जाने के बाद कांग्रेस के सांसद और विधिवेत्ता डॉ. अभिषेक मनु सिंघवी की इस दिशा में पहल से मिलता है। सिंघवी ने संसद के वर्तमान बजट सत्र में जनसंख्या नियंत्रण विधेयक नाम से निजी विधेयक पेश करने का निश्चय किया है। 'हम दो-हमारे दो' की नीति पर चलने के लिये राज्यसभा में पेश हो रहे निजी विधेयकों का मकसद प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ती आबादी के बोझ की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करना और ऐसे दंपतियों को लाभ प्रदान करना है, जिनके दो से ज्यादा संतान नहीं है। साथ ही दो संतान की नीति का पालन नहीं करने वाले 'गरीबी की रेखा से ऊपर के दंपतियों को सरकारी सहायता के लाभ से वंचित करना है। कहने के लिये ये सदस्यों के निजी विधेयक होते हैं लेकिन सामान्यतया, निजी विधेयक पर चर्चा के दौरान सरकार की ओर से जवाब मिलने या आश्वासन मिलने के बाद इसे वापस ले लिया जाता है। जनसंख्या पर नियंत्रण भी ऐसा ही विषय है, जिसमें सदन में कई बार चिंता व्यक्त की गयी है। जनसंख्या का मुद्दा उठने पर दलील दी जाती रही है कि पर्यावरण प्रदूषण और जल, स्वच्छ वायु, जंगल, जमीन और इसी तरह के अन्य संसाधनों के तेजी से खत्म होने की मुख्य वजह बढ़ती आबादी है और इस पर प्रभावी तरीके से नियंत्रण पाये बगैर स्वच्छ भारत और बेटी बचाओ जैसे अभियान भी पूरी तरह सफल नहीं हो पायेंगे। जनसंख्या नियंत्रण के लिये पंचायत स्तर के चुनावों की तरह ही संसद और विधानमंडलों के चुनावों में भी दो संतानों का फार्मूला लागू कराने के लंबे समय से प्रयास किये जा रहे हैं, लेकिन इसमें अभी तक सफलता नहीं मिल सकी है।

संसद के वर्तमान सत्र के दौरान राज्यसभा में पिछले महीने ही शिव सेना के अनिल देसाई ने जनसंख्या नियंत्रण विधेयक पेश किया था। कांग्रेस सदस्य के निजी विधेयक में कहा गया है कि दो से अधिक संतान वाले दंपति संसद, विधानमंडल और पंचायत चुनाव लड़ने या इनमें निर्वाचन के अयोग्य होंगे। ऐसे दंपति सरकारी सेवा में पदोन्नति के अयोग्य होंगे और केन्द्र तथा राज्य सरकार की समूह-क नौकरी के लिए आवेदन नहीं कर सकेंगे। यही नहीं, अगर विवाहित जोड़ा गरीबी की रेखा से ऊपर की श्रेणी में आता है तो वह किसी भी प्रकार की सरकारी सहायता प्राप्त कर नहीं कर सकेगा। प्रस्तावित विधेयक में यह प्रावधान भी है कि केन्द्र सरकार के कर्मचारियों के लिये दो संतान की नीति का पालन करना अनिवार्य होगा। इसी तरह, विधेयक में सभी माध्यमिक स्कूलों के पाठ्यक्रमों में जनसंख्या नियंत्रण का विषय शामिल करने का भी प्रस्ताव किया गया है। शिव सेना के अनिल देसाई ने फरवरी महीने में दो संतानों की नीति पर अमल के लिये संविधान में संशोधन करके इसमें अनुच्छेद 47-ए जोड़ने हेतु निजी विधेयक पेश किया था। देसाई भी चाहते हैं कि छोटा परिवार-सुखी परिवार के सिद्धांत का पालन नहीं करने वालों से सारी रियायतें वापस ली जानी चाहिए। इस संबंध में एक दिलचस्प तथ्य यह भी है कि पिछले साल मई में संपन्न लोकसभा चुनाव के तुरंत बाद ही देश में बढ़ती आबादी का मुद्दा उठाते हुए जनसंख्या पर नियंत्रण के लिये संविधान में अनुच्छेद 47-ए जोड़ने की मांग उठी। इस मांग के समर्थन में संविधान के कामकाज की समीक्षा के लिये गठित न्यायमूर्ति एम.एन. वेंकटचलैया आयोग के सुझाव का भी हवाला दिया गया। वैसे आबादी नियंत्रण के लिये 'हम दो-हमारे दो' का मुद्दा नया नहीं है। जनसंख्या पर नियंत्रण के उद्देश्य से नरसिंह राव सरकार के कार्यकाल में 79वां संविधान संशोधन विधेयक राज्यसभा में पेश किया गया था। इस विधेयक में प्रस्ताव किया गया था कि दो से अधिक संतानों वाला व्यक्ति संसद के किसी भी सदन या राज्यों के विधानमंडल का चुनाव लड़ने के अयोग्य था।

इस समय, दो संतानों का फार्मूला पंचायत स्तर के चुनावों के लिये कुछ राज्यों में लागू है। इनमें हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश और ओडीशा सहित कई राज्य शामिल हैं। परंतु हाल ही में असम में सत्तारूढ़ भाजपा की सर्बानंद सोनोवाल सरकार के एक निर्णय ने इसे अधिक हवा दे दी। राज्य सरकार ने यह नीतिगत निर्णय लिया कि असम में एक जनवरी, 2021 से दो से अधिक संतान वालों को सरकारी नौकरियां नहीं दी जायेंगी। उम्मीद की जानी चाहिए कि सरकार जनसंख्या पर नियंत्रण के लिये प्रभावी कदम उठायेगी।

मेहनत से आत्मनिर्भरता

एक दिन मोहम्मद साहब के पास एक हट्टा-कट्टा मगर भूख से व्याकुल व फटेहाल भिखारी आया। उसने मोहम्मद साहब से कुछ दान देने की गुजारिश की। पहले तो मोहम्मद साहब को उस पर क्रोध आया। वह सोचने लगे इतना हट्टा-कट्टा है फिर भी भीख मांगकर पेट भरने में विश्वास रखता है जो कि गलत है। भीख अच्छे-खासे इंसान को पंगु बना देती है।

उन्होंने उस भिखारी से पूछा-इस समय तुम्हारे पास क्या है भिखारी ने निराशा भरे स्वर में कहा, अब तो मेरे पास ये एक कम्बल व कुछ बर्तन ही शेष हैं। मोहम्मद साहब उसे अपने साथ बाजार लेकर गये। उसका कम्बल व बर्तन बिकवाकर उसे आटा और एक कुल्हाड़ी खरीदवा दी।

उन्होंने भिखारी से कहा-यह आटा आज की तुम्हारी भूख मिटा देगा। कल से तुम इस कुल्हाड़ी का प्रयोग कर लकड़ी काटकर अपनी जीविका चलाना। गुजर-बसर भीख मांगकर नहीं, बल्कि मेहनत करने से होती है। भिखारी ने खूब मेहनत की। अब वह अपनी मेहनत के बल पर आत्मनिर्भर बन गया था। वह मन ही मन मोहम्मद साहब को उनके इस 'महादान' के लिए धन्यवाद करने लगा।

प्रस्तुति : शशि सिंघल

फटी एड़ियों को हील करेगा ये घरेलू नुस्खा, कुछ ही दिनों में पैर दिखने लगेंगे सुंदर

आज के समय में हर किसी के लिए सुंदर दिखना एक बड़ी चुनौती की तरह हो गया है जिसके चलते वो अपनी त्वचा का ख्याल रखने के लिए न जाने क्या-क्या उपाय अपनाते रहते हैं, जिससे उनका चेहरे तो सुंदर नजर आने लगता है लेकिन वो कही न कही अपनी पैरों की तरफ ध्यान देना भूल जाते हैं, लेकिन हम आपको बता दें कि सुंदरता का पता सबसे पहले पैरों से ही चलता है. अगर किसी ने कितनी भी अच्छी सैंडल या सीलीपर क्यों न पहन रखी हो अगर उसके पैरों की एडियां फटी हुई होती हैं तो ये बेहद बुरी लगती है.

वैसे तो इस समस्या से बहुत लोग परेशान रहते हैं लेकिन ठीक तरह से शरीर की देखभाल न होने पर एड़ियां फट जाती है जिस वजह से कई बार तो एड़ियों में दरार पड़ जाती है और खून निकलने लगता है. आज हम आपको फटी एड़ियों को कोमल और मुलायम बनाने का बेहद आसान घरेलू उपाय के बारे में बताने जा रहे है. जिसे फॉलो करके आपको फटी एड़ियों से मुक्ति मिल जाएगी.

इन चीजों को कर लें इकट्ठा

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

- आपको इस घरेलू नुस्खे को बनाने के लिए विशेषतौर पर वैसलीन और नींबू की जरूरत पड़ेगी.

- सबसे पहले एक खाली कटोरी लें उसमें 5 से 6 बूंद नींबू का रस और एक चम्मच वैसलीन डालकर अच्छे से मिला दें.

- इससे एक समूद पेस्ट तैयार हो जाएगा.

- अब एक बाल्टी में पानी को हल्का गुनगुना करें. अब इस गुनगुने में पानी में पैरों को 15 से 20 मिनट तक डालकर बैठिए. - गुनगुने पानी से पैरों को निकालने के बाद उन्हें अच्छे से पोछिएं

- अब वैसलीन और नींबू से तैयार किए गए पेस्ट को फटी एड़ियों पर अच्छे से लगाइए.

- लगभग आधे के घंटे बाद जब यह पेस्ट सूख जाए तो पैरों को पानी से धो लीजिए.

- सप्ताह में एक बार इस पेस्ट का इस्तेमाल करने से फटी एड़ियां खत्म हो जाएंगी और पैर हमेशा सुंदर दिखेंगे.

- अगर, संभव हो तो पैरों पर यह पेस्ट सोने से पहले लगाएं.

बाज़ार की तिकड़मों से बेजार आदमी

आलोक पुराणिक

हरियाणा की सुपर बैट्समैन शेफाली वर्मा ने खेल के मैदान में शानदार प्रदर्शन किया है। उनके खेल की बदौलत पेप्सी ने उन्हें अपना ब्रांड एंबेसडर बनाया है। पेप्सी की बदौलत ही परफारमेंस और क्रिकेट की परफारमेंस आ रही होती, तो पेप्सी बेचने वाले डीलरों के बच्चे सुपर क्रिकेटिंग स्टार होते। पेप्सी से ही टाप क्रिकेटर बन रहे होते। ऐसा होता नहीं है। पर होता यही है कि जो कामयाब हो जाता है, वह पेप्सीवान हो जाता है। जो पेप्सीवान न होता, उसे आमतौर पर कामयाब नहीं माना जाता है। सिर्फ रन बनाने से क्या होता है, जब तक पेप्सी ना बेची, तब तक बैटिंग को पेप्सी-स्टैंडर्ड का नहीं माना जाता।

विराट कोहली मेहनत लगन से वहां पहुंचे, जहां वह आज हैं। आज उनकी कामयाबी का क्रेडिट किसी कार, किसी मोबाइल, किसी बाइक को मिलता है। बहुत संभव है कि विराट कोहली या शेफाली वर्मा कोई मास्क लगाये दिखें और कहें कि कोरोना से उन्हें बचाया किसने, फलां मास्क ने जी।

आलिया भट्ट इन दिनों तमाम आइटमों की ब्रांड एंबेसडरी करती दिखती हैं। पूछना बनता है उनसे-रोज सनफीस्ट डार्क फेंटेसी बिस्कुट, पेप्सी लेज, कोका कोला, कैडबरी पर्क को गड़पकर करके कोई फिट कैसे बना रह सकता है। इतना खाने-पीने की फुर्सत आलिया भट्ट निकाल कहां से लेती हैं, इतनी फिल्में, इतने इश्तिहार वो कर रही हैं। इतना खाने-पीने की परम फुरसत तो तुषार कपूर के पास है, पर उन्हें कोई न खिलाता सनफीस्ट डार्क फेंटेसी बिस्कुट।

यही कमाल है, जो बंदा एकदम परम खाली बैठा हुआ कि सब कुछ खाने-पीने को, उसे कोई पानी भी न पूछता।

शब्द सामर्थ्य -069

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. रूचिकर लगने वाली, रूचि के अनुकूल, चुनी हुई 3. राजाओं के बैठने का आसन 6. श्रमिक 7. कार्य, काज 9. वाद्ययंत्र आदि बजाने वाला 10. सहारा, सहायक वस्तु 11. शर्म, लाज, हया 12. मक्खन, माखन 14. श्रीमती राबड़ी देवी इस प्रदेश की मुख्यमंत्री हैं 15. चंद्रमा, रजनीश, चांद 18. पुस्तक 20. अवधि, समय 21. तर्क वितर्क और कहा-सुनी, जबानी झगड़ा 22. सूरत, आकार 23. झुका हुआ, नत।

ऊपर से नीचे

1. पंद्रह दिन का समय, शुक्ल या कृष्ण पक्ष 2. आग बुझाने की मशीन 3. हिंदु विवाहित स्त्री के मांग में भरने का लाल चूर्ण 4. पराजय, माला 5. मुंह ढकने का कपड़ा, घुंघट 8. चंदन, दक्षिण का एक पर्वत 10. व्यवस्थित करना, सजाना, स्वभाव आदि का परिष्कार, शुद्ध संबंधी कृत्य 12. विशालता, बड़प्पन, महान होने का भाव 13. अड़चन, रुकावट 15. जमीन के अंदर गहरा और लंबा रास्ता, अच्छे रंग का 16. बेवकूफ, मूर्ख, अहमक 17. औसत के हिसाब से 18. कृषक 19. अधिक, ज्यादा।

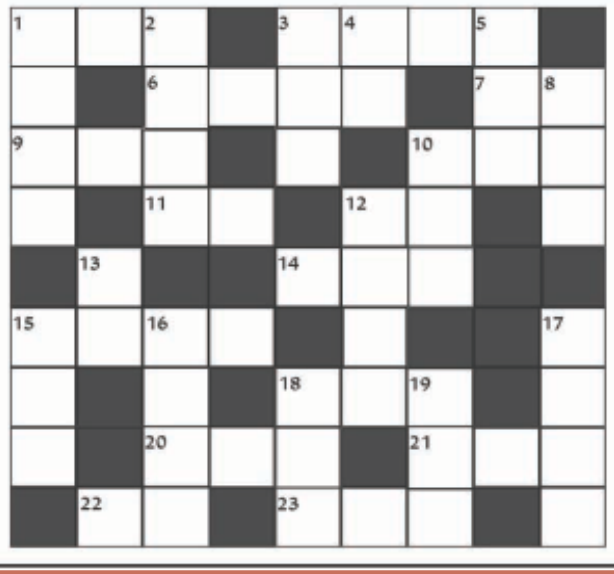

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 68 का हल

ज	ल	■	आ	वा	जा	ही	■	■
मा	■	खू	ब	■	दू	र	स्थ	■
ना	दा	न	■	सा	ग	■	ल	क्ष्य
■	न	ख	■	त	र	ल	■	■
■	वी	रा	न	■	■	च	ट	क
■	र	ब	■	आ	ज	क	ल	■
■	■	■	आ	ग	■	दा	ना	■
■	अ	ग	र	म	ग	र	■	क्रो
भा	भी	■	ती	न	■	■	व	ध